

मलया की ना ४. यनी ना संमुख ४. न ना हं कय या न घा. ने ४ सह व न वा हि न ४. न
 न रु त्या मा ग ल्य ना. द वी सा रु म्र य न ४. द वि द वा रु न ४. स र्व. सा रु न व र हि ४. हि
 ना ४. ल मू ल्य लि छि ति ४. लं. सा क्ता नू य रु का नि ली। लं नि वृ लि ४. य नि षा लं. वि द
 या भां ति स्त्र भ व च ॥ भां त्या नी ना ल भ वा थ. ना द नि ४. य लि का न ली। ॐ न्दि का दीः
 पि का लं लं. आ धि का लं च भा दि का ॥ ल मू र्ध ग मि नी द वि. वि दू ध का रु का नि ली
 । वा पि नी धा म नू या ल. म ना थ नै न सं कि ना ॥ अ ना न ना ल भ वा सि. क ला का लः
 नै का न ली। ॐ क्ता नी कि या था लं. द वि लं क्ता ली न्य पि ॥ व स्र धा लं ल भ वा य ४

लं ग ज ४ लं च मा न न ४. ल मा का न ल नू य ल. यं च ल न वि ल ति क ॥ लं गं ध ४ लं
 न स ४ लं च. नू य लं ल भ भ व च। न र्द ल भ व द व नि. यं च न मा न का नि र्ति ॥ ना
 सि का लं च जि का लं. दृ ष्टि लं लं ल (ग व हि। अ नि ल भ व स र्व रू. य ऋ वृ ङि
 द्रि या लि क ॥ वा ली ल भ व या लु लं. या दो लं या य न व च। उ य ल लं स दा द
 वि. यं च क र्म द्रि या लि क ॥ लं म ना हं क ति लं च लं धी ४ लं म नू ४ क न ल उ
 यी। न जं स लं न मा रि लं. स क्ता नि लं उ ल ति क ॥ वि क्ता कि ल म सि ना ग
 ४ लं नि षा मि का। लं का ल लं क ला मा याः लं वि या लं च मी न ४ ॥ स स जि
 धी

व० लभवासि. त्वं गकि त्वं निवासिका। यती दद विसर्वरू. सर्वत्रयमरुथ
 नी॥ यमार्त्तं यमयं त्वं. यमायी यमि नितुथा। कृष्ण त्वमसि दवजि. यवान्
 वल्लभवच॥ जयगायत्रयल. सुयरा वासिक जय०। जयान यत्रयल.
 जयकायात्रयन०॥ जयलक्ष्मत्रयल. जयसंगा यत्रयिले। जयवाभाह
 त्रयल. त्वं विवकां स्मके जय॥ नमस्तु त्वं मरुमाय. नमस्तु त्वयनासिनी। काः
 लनालि नमस्तु त्वं. नमस्तु का लहाविली॥ नम० कर्मा स्मकेतु त्वं. नमस्तु कर्माः

तु रीः

हदिनि। नम० पूष्ययदद्वि. नमस्तु यायमद्विने॥ नमस्तु नयदतु त्वं. न
 मस्तु गाय रं जनि। नमस्तु कयदतु त्वं. नमस्तु वंधभाचनि॥ नमस्तु क्रीयद
 तु त्वं. नमस्तु देहदाहिनि। नमस्तु बाधिच्छिदतु त्वं. तुल्यमाधिरिदनम०॥ न
 म० कविलं करु त्वं. दायिलेवृद्धि दायिले। तुल्यं सात्रयधायनसत्रयनि नम
 नम०॥ नमस्तु उक्तत्रयल. नमस्तु नंतु त्रयिली। त्वं दत्रयनमस्तु. नमस्तु
 विष्णुत्रयिलि॥ का लत्रयनमस्तु त्वं. नमस्तु गकत्रयिलि। चर्ममूलनमस्तु त्वं
 नमस्तु सिंहवाहिनि॥ मरुल्ले नवीरुत्रयं. मरुभाहि निचलिके। मरुक

लीमहालक्ष्मी महाविश्वमहेश्वरि॥ अथ यत्र नाथप्रदवि. यत्र यत्र मवि
 क्रम। यत्र नंदयुद्धवि. नमस्तु नभानम॥ सर्वं सर्वददवि. सर्वः
 (ग) सर्वत्र पिलि। सर्वथापि निसर्वं। नमस्तु नभानम॥ ॐ निसुतामः
 यादवि. बुद्धिं विष्णुना तथा। चंद्र (सं) दक्षिण. न विनोचतथा यत्र॥
 अमत्र लोकदिक्काले ४ युजि नायनात्मरि॥ किंचिद्विरुद्धसुखी उ. मू
 वाचदं वनसुया॥ कुरुते जगतां नाथ. यस्तु च नसि वरुन। न वक्तव्यः
 वथ नाह. मिहायातामहाकृष्ण॥ समं वृद्धलदवत्त. वीनरुद्धलसत्त्वं

। यदादिनसिभदव. सर्वतत्त्वनाम्यहं॥ ॐ ह्यकचतदादवा. मथाकं सूत्रं वेदि
 नो कुर्यात्कुरुष्वदव जि. दवानसि मया सदा॥ दक्षिणायायना (धर्यं) कृतव्यं क
 मया लया। स्वयं वमालिनेर्यस्मान्. कृतमालिनेर्यस्मान्॥ अर्न्यं त्वं प्रार्थयदवि.
 मनुकृताय ४ ॐ मीमुनिं। यति श्रुत्यं रुक्मा. तं यूतमिवया सय॥ कृष्णद्रुवाः
 ल्य (स) षा वि. विनिकार्यमहासुखे ४ सुखेन सुखेयसत्त्वं. यूजयमना तथा नू॥
 ॐ ह्यकं लं महादवि. यत्तु वाचा चितं वच ४। कविष्य कुरुक्षेत्रं. दवान् यनि
 सर्वदा॥ दक्षिणायायना (धर्यं) कृतसुद्धचनान्मया। विष्णुषत ४ ॐ दं स्तार्त्त

ननु नमस्तु नमस्तु ॥ यद्यपि विद्याति न स्यात्, नित्यं निकटवर्तिनि। सर्वान् कामान्
मान् प्रियाः सर्वान्, दास्याभाधनसंशयः॥ धर्मानर्थस्तथा कामाः, भार्गवैवचन
र्थकैः। सदेव न स्य दास्यामि, तिस्रं यद्यपि विद्याति॥ आयुर्वृद्धिः, वृद्धिः
न वृद्धि वनमिष्या। कस्तुभूतमिष्या, वृद्धिस्तु स्यैव जायते॥ तैलं क्व वक्ष्यः
नान्तस्य, याति नात्र विचार्यतां। यद्यदिच्छति न सर्वं, त्रैवक्ष्यं दास्यामि हं हं॥
वृक्षं कासादौ ते देवी, हृदकासीनि जातयं। विजयं नाम तु वनं, वृक्षाह
स्यापि निष्किना॥ सावी न रज्जु न उलं, सार्द्धं सुदिनमानसा। नित्रा हं हं

गनाचार्य, जे लाक विजया रिक्का ॥ सुखाय लम्य नां दवा, यद्वष्टामनसा सुत ॥
 साई दक्ष नत सर्व, जगमू ८ निज निजा शर्म ॥ ॐ तन कथिनी रुध, नेर्य दचः
 विर्तन दवा ॥ ॐ दानां गृह्य सु शांति, मन्त्रा द्वा नादि न त्वन ॥ ॥ ॐ नि ग्री शाः
 मसि द्वा न्न रुध का ली मा रु अदि नी य ८ य ठ ल ८ समा य ८ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 गना लो कि का ग्नि, नृ ल न था द्वा ॥ नृ ल न च तु सं स्का न ॥ ग न्ध यू व्या दि ति
 ८ सं यू य ॥ नृ ल न य ८ यू व्या ८ लि च र्ग्य नं यू य ॥ य ठ (ग न च ॥ ८ ग्ना
 रु गी रु त्वा ॥ यी ० य व ना ल्य आ व न ल य व ना ल्य ॥ सं स्था रु ति

वद्वकलुनवायनमः॥ ॥ अथ प्रजा॥ आसनं यथि वृत्त्यादि॥ यथि त्वय लादि॥ दि
गसं किं (ग) लुता न॥ अथ स र्थादि॥ नि नाच म॥ सूर्यार्थ॥ धवद लया च स या थ स पा प
पुत्र व क्षा न याय॥ वक्र रु त्या गि न ल्क ल्ध, ल ल्क ल्ध य लु क द र्थ॥ स ना या न द दाय कं, उ
त्र न ल्ध, क ठि द र्थ॥ त ल्सी स र्ग य द द र्थ, म र्ग य ल्ग य त कं, उ य या न क ना मा न, न
क ल्म ष वि ना च न॥ स्व भू च र्म ध र्म क र्ध, क र्धो पा र्थ वि चि न्म य न॥ हं स, (अ) म लु
या ल या व, क लु लि नी थ का या व, स रु स द स स या द, य च मा लो ड, न या ला क ल
ल या व, (अ) न लि॥ या ल या म या य॥ यं ४ इ का य, क्का सु व र्म नू गे ल स क्षा न या का
व (थ) न उ त्थ लि क व वा यू व न या य पु नू ष ग द ल ल य॥ नं १५ क का व त य क्का ड वः
व र्म ना लि स क्षा न या का व (थ) न उ त्थ लि क व अ ग्नि न या य पु नू ष ध व स नी नं त या द

॥ ध व क या ल स ता यू व र्म क्षा न या का व (थ) न उ त्थ लि
क ल ल य॥ लं १ इ का य ४ क का व त य र पि का य पृ थि
ल ल य॥ हं १ इ का य ४ क का व त य, २ पि का य, थ व सि
क्री स की ग न नू म त ल स र्ग ड या व (थ) अ म त न थ व स
य नू य थ म र्म न व नू य ल ल य॥ ॥ ध व या ल य नि षा या
व र्म ल ग क र्म ल नि ष म म स र्ध लि या लि स र्ध चि नं लि क
॥ ॥ अथ न्या स॥ या ल या म॥ ॐ डी ८, ३३, १५॥ अथ श्री व द क र्म
व ल्ध को अ ध य न मः॥ क या ल॥ ॥ ग य वी क न्द स न मः॥ क थ
व द व ता य न मः॥ व ग ल स॥ ॥ डी वी गाय न मः॥ ना लि स॥ ॥ व

[illegible]

नवउ वाच। दिवगिद हिमदार्थं कात्रलकथातीक्ष्णवी। मयत
 मिश्र॥ न। सषुचमहाघातं महावायुवनसूच। ॐ गीम नी
 न॥ ॥ **दीधवाच** ॥ कथयामि ह। सुखाह। वद कंठक वज्र
 मातृजाभाय नयुध॥ ॥ वद कंठ नवक वचस्य नन्ये
 वद कंठ नवावतता वीर्यं ह्रीं। कि न राषु सिद्धार्थं जय विनिशा
 हाय न कथ्य न धव सायु ३४। यातु मा वद का दवा, से नव ४ स
 म। मितां। गम, दि नि न कतु सर्वदा। आ। ग्न या च न ३४ यातु, द दि।
 न क। न म तो का। न ४ यातु, आ। म ल सु य निभ। वाय व्या म क या ही च, नि र्य या
 न ४। लीष। स। न क यातु, उ। न र्त्वा दि नि स दा ४। स। हान र न व ४ पां तु, दि

मूर

तलर

यातु विना नावे याता ल न न का वि उ ४। सधा जा त सु मा पाया सर्व
 न द वा व तु या न्म, व म धा न ल्म था व तु। न ल्ये न य या तु ल्म ले पा
 गी यू व क ४ यातु, पूरा न्म स व न ४ य ४। हो कि नी यू व क ४ यातु दा
 यातु सा कि नि का यू वः। ग्रिय म् स न र्त्त गि न ४। मा। लि नी यू व क ४ पा
 ॥ म हा का ला व तु क्तु, ले न्ये वे का ल र न व ४। वा र्य वा य वि य
 वः॥ ॥ ए न ल्म व च मी ग न, त व ल्म हा ल्य का गि र्त्त। ना र्ये स
 च वि य ४। य म् क म् न दा त र्य, क व र्त्त ल यु द् ल र्त्त। न द
 र्त्त क न ४। या द दा ति नि षि ड र्यः स व र्त्त ल र्त्त। ल व र्त्त क्त्त
 ल वि च क्त्त। वि च न न्य ल्म क्त्त। वि चो य ४ या य न

हं यज

४५:४॥ **॥** द्रु काययुतवदत्। दवीय वमृदुत्य मनु नाजमिमं विथ। मनु
 नमिमं देवि। उलाक्याति इत्तुं॥ अयु का ॥ ००॥ ममं सर्वं किं समन्ति तं॥
 एवं समृद्धिं मनु॥ सर्वं कामरु सयुद॥ नाजसाम्य कर्मनेव क्कृत वाः सिद्धि का
 किलि॥ दिन दिन सहस्रं वा गती वाय विवर्तयत॥ सर्व विद्यु विना भय सर्वय
 दवना नय॥ **॥** दग्दि ग्वधनं कला गुत्र न तो समाहित॥ या भयाम गुर्यं कया
 सुसमत्त समुत्तम॥ ॥ **॥** दग्दि काययुतवदत्। दवीय वमृदुत्य मनु नाजमिमं विथ। मनु
 नमिमं देवि॥ ॥ ००॥ निमत्त॥ ॥ मूसमर्त्त ततः सुत्या दह न्या सीत गान्य सत॥ ००॥ न्यादि क
 मन्था क यं चमत्ता सव यनी॥ ००॥ न मर्द्धि विन्यस्य मुख न त्य नृष्य सत॥ अथा

नद दय देवि गुक् वामं त गान्य भन॥ सथा जात या दय (न) विन्यस रुत्तमन्ति तं॥
 ॥ एवं कर्मणि विन्यस रुत्तमन्ति तं॥ ॥ एवं न्यास विधिं कृत्वा पन्था न्मर्त्त जप
 सुधी॥ सन नय दवमत्तस्य रुतयुत विभ चका॥ विदुर्वैत्य ति लीता वे का रुत्त
 मित्रयुतः॥ य॥ य॥ दानय दायि युजय दायि युष्क॥ नागि चो न रुयं नतु यह
 नाज रुयं नहि॥ नच मा नी रुयं नतु सर्वतु सुखमा युयात॥ आयु ना ना ग्य मे यः
 यः युज यो जा दि सम्य द॥ रुव न्नि सत नं नतु युष्क कल्या पि युज नान॥ नदा विद
 न दो र्ता ग्य नाय द रुय मवच॥ ॥ श्री या व स वाच॥ य न रु रु न वा नाम ता वद
 दान कामनः॥ तया च क थिता दव ले न व ४ के ल्य रु रु म न स्य नाम सह सा नित्र

युता न्यद्वेदलिच॥ सावमृद्धत्यतषावे, नामाष्टानकं वरु॥ यानि सैकीर्णयन्मर्थः सर्व
इह स्वविदितं ४॥ सर्वा कामानवाप्नोति, साधकः सिद्धभवत् ४॥ ॥ ॐ ॥ न उवाच
॥ श्रुत्वा विप्रश्चापि, तेन तस्य महात्मनः। आय इन्द्रा न कस्य ह, नामाष्टानकमुक्त
मे॥ सर्वपापहरं पुण्यं, सर्वपापविनिवारणं॥ सर्वकामार्थदं दधि, साधका नास्तीति
बहु। सर्वमंगलमागल्यं, सर्वसिद्धियदायकं॥ आयुः करं पुष्टिकर्म, श्रीकर्त्रे च यः
भक्तने॥ नामाष्टानकस्यास्य, कुन्दानुष्टुब्धदाहते॥ बृहदानुष्ठुब्धको नाम, अविष्कृत
वनि कीर्तितं। मूषवार्द्रतिनयनं, निवीडं समाहितं॥ भक्तिर्दीप्तकीर्तिकाः ॥
यः मेषसिद्धीनिथाजयत्॥ सर्वकामसिद्ध्यार्थं, दिनिथागत्य कीर्तितं ४॥ ॥

शिर

[illegible]

दीर्घां सयसं नो मि सिद्धय ॥ ॥ सा लि कं ॥ व न्य वा ली सु ठि क स ड्डी कं ॥
लाहा सि व कं दि या ॥ क ल्ये न व म नि म र्थे ४ किं कि नी नू य न य ४ दी पा का न
वि ग द व द तं स य स नं वि न रं रु क्ता का ल्या व द्र क म नि र्गं ५ ल द (लो) द ध नं ॥
॥ ॥ ना ड स ध नं ॥ उ ड्डी क न स नि रं वि न य नं न क र्ग ग न ग मु डं स्म य स्य
व न र्द क पा ल म रु यं ५ ल द ध नं क र्ग ४ नी ल ग्रा व मू द न स य नं ध नं जी तं शु
ष (अ) द रं व न्ध का नू ल वा स रं रु य रु न्द व रं रु ड्डी व रं ॥ ॥ त म स ध नं ॥
ध्या यं नी ला दि का र्क ग नि स क ल ध रं मू लु मा लं म रु र्गं दि ग्व र्ग विं ग क र्ग
उ म नू म थ ग्ग लिं ख ङ्ग या सौ रु या लि ना र्ग र्ग टी क पा लं क न स न सि न रं रु वि तं

न नं रु स र्वा क ल्या वि न रं म लि म य वि ल स र्कि कि नी नू पू ना र्ग ॥ क न क
लि न क या रु क्ता ली द लु या लीं रु नू ल सि मि न नी ल ग्रा स य र्ग य वी नी क उ
स म य स य य वि द्र वि ड्डी द रु रु र्ग य ति व द्र क ना थ सि धि द ४ सा ध का र्ग ॥
रु न वा रु न ना थ ५ रु ना स्मा रु त रा व न ४ रु रु रु रु रु वा ल ५ रु रु द ४ रु रि य ५
वि ना र्ग ॥ स्म ग न वा नी म सि मी ख र्ग ना मी म र्गो न क न क य ४ यान य ४ सि ५ ४
सि धि दे ४ सि ५ ४ सि वि न ४ ॥ क का रु ४ का रु स म न ४ क ला का रु न नू ४ क वि ४ ॥ वि न
ग व रु न न ५ रु थ र्गि ग ल लो च न ४ ५ ल या लि श्व रु या नि ४ क का रु धू स ल ५
रु न ४ ५ रु ली नू रु न वा ना थ रु न या या गि नी य ति ४ ध न दा ध न रु नी च ध न वा न